दीपोत्सव त्यौहार

ज्योतिपर्व के पावन अवसर पर आठो पहर हमारे आनंद हो । वह उसके लिए मानसिक शांति और चित्त की प्रसन्नता की जरूरत होती हैं जो सवेगों और आवेगों पर नियत्रंण रखने से सम्भव हैं । वह इससे हमारे कषाय उपशान्त होंगे ,हमारी इच्छाएं सीमित होगी ,अर्जन के साथ विसर्जन की वृति का विकेक होगा । वह सब जीवों के प्रति अपनत्व का भाव होंगे तो हम आठो पहर प्रसन्नता का आनंद ले सकते हैं । वह आज के दिन हमारे द्वारा ममता की ऐसी ज्योति जले जिससे हमारे मन में समता का अनन्स् में भाव पले। झुग्गी से ऊंचे आवासों तक जिससे एक समान उजियाला हम कर पाएं ऐसा कोई दीप हमारे द्वारा जलें । मिट्टी के दीपे में भी अमृत ज्योति जल सकती है । मानव तन मिट्टी का ही बना हैं उसमें आत्मा के द्वारा अनन्त उर्जा होती हैं । उस उर्जा को सही से प्रज्वलित कर हम अनन्त शक्ति का श्रोत बहाएं । वह नस-नस में उज्जवलता ला दे । स्नेह और सौहार्द जगा दे। प्रेम, दया की तेल बाती से अंतस



को आलोकित कर पाएं । ऊंच-नीच के घेरे तोड़ें। वह जो बहक रहे हैं उनको मोड़ें । भेद-भाव से अलग-थलग प्रेम, दया ,करुणा आदि को बरसाएं । दीवाली के सन्दर्भ में हम चिन्तन करें कि क्यों प्रकाश के प्रतीक दीपक का जीवन वंदनीय है । इसलिए नहीं कि वह जलता है। बल्कि इसलिए वंदनीय है कि वह दूसरों के लिए जलता है। वह स्वयं वेदना सहता है पर दूसरो का घर प्रकाशित करता है। यह पर्व इस तरह हमको बहुत बड़ी शिक्षा देता है और साथ में हमको यह भी बोल जीवन की सार्थक प्रेरणा देता है कि मिट्टी बनने से पहले दूसरों को हम प्रकाश बांट जाये। दीपावली सदा अमावस्या को ही मनाई जाती हैं । बहुत से कारणों में से दो कारण लंका विजय भगवान् राम का अयोध्या आगमन कर हैं व आध्यात्मिक दृष्टि से हम देखें तो इसी अमावस्या को प्रभु महावीर का निर्वाण हुआ था जो यह याद दिलाता है कि कीचड़ में भी कमल खिलता है। जीवन का पवित्रतम संयोग घटित होने में भी अमावस्या कोई बाधा नहीं है। मिट्टी पृथ्वी का और ज्योति आकाश का हिस्सा है, इसी आधार पर हम कह सकते हैं कि दीपावली लौकिर जीवन में उर्द्धगगामी होने की प्रेरणा का अंतर की ज्योति जगाने का पर्व है। दीपो ज्योति पर ब्रह्म , दीपो ज्योति जनार्दन , दीपो हरतु मे पापं , संध्यादीप नमोस्तुते । वीर के निर्वाण का पर्व हैं । गौतम के केवलज्ञान का पर्व हैं । आत्मा के कल्याण करने का पर्व हैं । ऋद्धि सिद्धि का पर्व हैं । महालक्ष्मी की साधना का पर्व हैं । मां सरस्वती की आराधना का पर्व हैं । दीपो की दीपमालिकाओ का पर्व हैं । तीर्थंकर भगवान् महावीर स्वामी के निर्वाणोत्सव , गौतम स्वामी के केवलज्ञान प्राप्ति का दीप प्रज्वलित कर बनाने का पर्व हैं - दीपावली । ह्रास के एक कोने पर एक कुम्हार बैठा था । दिवाली का त्यौहार का सोच उनको बेचने का चिंतन कर दीयों का ढ़ेर लगाकर वह बैठा था । वह मन में यह आस लगाकर सोच रहा था कि यदि मेरे सारे दीये बिक जायें तो मेरे घर में भी दीवाली बन सकती हैं । मिट्टी के दीये आजकल कौन खरीदता हैं । वह सारे आयातीत दीये तो दो तीन साल भी चल जाते हैं और तेल भी नहीं खाते। उन मिटटी के दियों पर केवल एक नजर डाल कर खरीददार निकल रहे थे । वह ज्यों - ज्यों दिन बीत रहा था कुम्हार का मन उदास हो रहा था । वह यह सोच-सोच कर कि उसके बच्चे हाथ में कुछ न पाकर दीवाली कैसे मनायेंगें । इतने में एक ग्राहक आया। वह देखने में कुछ समझदार लग रहा था । उसने दिल में कुम्हार के प्रति सहानुभूति का भण्डार भरा और एक नहीं, दो नहीं, पूरे हजार दिए खरीद लिए ।

यह देख कुम्हार की आंखों में चमक आ गई। उसे लगा कि किसी फ़रिश्ते ने उस पर महर कराई हैं । वह कोई खरीददार नहीं था कोई देवदूत आया जिसने उसके बच्चों क मुंह पर मुस्कान दिलाई। यह बात हम सब के चिन्तन को है कि किसी त्यौहार पर जब हम आनंद-उत्सव मनाएं तो एक दीन भाई का परिवार क्यों मायूसी में सिमट कर रह जायें। हम अपने घर दीप जला कर अन्य का भी दीप जलाएं । हम ज्योति पर्व दीपावली सहोल्लास मनाएं। दीपक की बाती जलने के लिए तेल में डूबी और तेल के बाहर भी रहती है । हमारा जीवन जीने का भी तो यही सही तरीक़ा है । संसार में रहते हुए भी पर इससे निष्प्रभावित भी रहें । आशा है हम भी दीपावली का त्यौहार मनाएं पर दीपक की बाती से शिक्षा पाएं । इसी आशा और विश्वास के साथ शुभ दीपावली ।

› प्रदीप छाजेड़ (बोरावड़)

जज्बे, संघर्ष, अनुशासन और सामूहिक संकल्प से भारतीय पुरुष हॉकी टीम ने छठी बार एशियाई चैंपियन बनकर रचा इतिहास

भारतीय हॉकी का स्वर्णिम गौरव : एशिया पर फिर छाया तिरंगा

भारत की हॉकी केवल एक खेल नहीं, बल्कि देश की गौरवशाली खेल विरासत, राष्ट्रीय स्वाभिमान और सामूहिक शक्ति का प्रतीक है। जब भारतीय हॉकी टीम मैदान में उतरती है, तो करोड़ों देशवासियों की उम्मीदें उसके साथ होती हैं। हाल ही में भारतीय पुरुष हॉकी टीम ने एशियन चैंपियंस ट्रॉफी 2026 के फाइनल में जापान को 4-1 से पराजित कर छठी बार खिताब अपने नाम किया। यह विजय केवल एक ट्रॉफी जीतने की उपलब्धि नहीं, बल्कि भारतीय हॉकी की निरंतर प्रगति, खिलाड़ियों की मेहनत और देश की खेल प्रतिभा का गौरवशाली प्रमाण है।

हार के कगार से ऐतिहासिक विजय तक

इस मुकाबले की शुरुआत भारतीय टीम के लिए चुनौतीपूर्ण रही। जापान के खिलाड़ी काजुमासा मात्सुमोतो ने मैच के तीसरे मिनट में गोल करके भारत पर दबाव बना दिया। जापान की मजबूत रक्षापंक्ति और गोलकीपर के शानदार प्रदर्शन के कारण भारतीय खिलाड़ी पहले दो क्वार्टर तक गोल करने में सफल नहीं हो सके। मध्यांतर तक जापान 1-0 से आगे था।

लेकिन भारतीय खिलाड़ियों ने धैर्य, आत्मविश्वास और अद्भुत खेल कौशल का परिचय देते हुए दूसरे हाफ में मुकाबले की तस्वीर ही बदल दी। 42वें मिनट में शिलानंद लकड़ा ने पेनल्टी कॉर्नर के माध्यम से भारत को बराबरी दिलाई। इसके बाद 48वें मिनट में दिलप्रीत सिंह ने शानदार मैदानी गोल कर भारत को बढ़त दिलाई। 53वें मिनट में जुगराज सिंह ने पेनल्टी कॉर्नर पर दमदार ड्रैग फ्लिक से तीसरा गोल किया, जबकि 54वें मिनट में विवेक सागर प्रसाद ने चौथा गोल दागकर भारत की जीत सुनिश्चित कर दी। इस प्रकार भारत ने 4-1 से शानदार विजय प्राप्त की।

जीत के पीछे सामूहिक प्रयास और अनुशासन

इस ऐतिहासिक सफलता का सबसे बड़ा संदेश यह है कि खेल में प्रतिभा के साथ धैर्य, अनुशासन, रणनीति और टीम भावना का भी विशेष महत्व होता है। भारतीय टीम ने शुरुआती झटके के बावजूद अपना आत्मविश्वास नहीं खोया। खिलाड़ियों ने एक-दूसरे का सहयोग करते हुए विरोधी टीम की रणनीति को समझा और परिस्थितियों के अनुरूप अपने खेल में बदलाव किया।

कप्तान हरमनप्रीत सिंह के नेतृत्व में पूरी टीम ने शानदार सामंजस्य दिखाया। गोलकीपर से लेकर अग्रिम पंक्ति के खिलाड़ियों तक सभी ने अपनी जिम्मेदारी बखूबी निभाई। मुख्य प्रशिक्षक क्रेग फुल्टन की रणनीति और खिलाड़ियों की मैदान पर प्रभावशाली कार्यक्षमता ने इस सफलता को संभव बनाया।



विशेष उल्लेखनीय है कि भारत ने इस प्रतियोगिता में अपने सभी मात मुकाबले जीतकर अपराजित रहते हुए खिताब हासिल किया। सेमीफाइनल में दक्षिण कोरिया को 8-1 से हराने के बाद फाइनल में जापान पर 4-1 की जीत ने भारतीय टीम की श्रेष्ठता सिद्ध कर दी।

लगातार तीसरी बार चैंपियन बनने का गौरव

भारतीय पुरुष हॉकी टीम ने वर्ष 2023, 2024 और 2026 में लगातार तीन बार एशियन चैंपियंस ट्रॉफी जीतकर एक नया इतिहास रचा है। प्रतियोगिता के इतिहास में यह भारत का छठा खिताब है। इससे पहले भारतीय टीम 2011, 2016, 2018, 2023 और 2024 में भी यह प्रतिष्ठित ट्रॉफी जीत चुकी है। इस उपलब्धि के साथ भारत ने एशियाई हॉकी में अपनी बादशाहत को और मजबूत किया है।

यह विजय अनुभवी मिडफील्डर नीलकांत शर्मा के लिए भी भावुक और यादगार रही, क्योंकि राष्ट्रीय टीम की जर्सी में यह उनका अंतिम अंतरराष्ट्रीय मुकाबला था। उनके योगदान को यह खिताबी सफलता एक शानदार विदाई के रूप में याद रखेगी।

भारतीय हॉकी का उज्ज्वल भविष्य

भारतीय हॉकी का इतिहास अनेक गौरवशाली उपलब्धियों से भरा हुआ है। मेजर ध्यानचंद जैसे महान खिलाड़ियों ने इस खेल को विश्व पटल पर विशिष्ट पहचान दिलाई। ओलंपिक में भारत के स्वर्णिम इतिहास से लेकर आधुनिक अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं तक भारतीय खिलाड़ियों ने अपनी प्रतिभा और परिश्रम से देश का मान बढ़ाया है।

आज आवश्यकता है कि इस सफलता को केवल उत्सव तक सीमित न रखा जाए, बल्कि इसे देश में हॉकी के व्यापक विकास का आधार बनाया जाए। ग्रामीण क्षेत्रों, छोटे शहरों और विद्यालयों में हॉकी की सुविधाओं का विस्तार किया जाए। प्रतिभाशाली खिलाड़ियों को आधुनिक प्रशिक्षण, बेहतर खेल उपकरण, पोषण, आर्थिक सहायता और अंतरराष्ट्रीय स्तर की प्रतिस्पर्धा के अवसर उपलब्ध कराए जाएं।

विद्यालयों में खेलों को शिक्षा का अभिन्न अंग बनाना भी जरूरी है। क्योंकि खेल बच्चों में अनुशासन, नेतृत्व, सहयोग, आत्मविश्वास और संघर्ष करने की क्षमता विकसित करते हैं। किसी भी राष्ट्र की वास्तविक प्रगति केवल शैक्षणिक उपलब्धियों से नहीं, बल्कि उसके नागरिकों के शारीरिक और मानसिक विकास से भी निर्धारित होती है।

विजय का संदेश = संघर्ष ही सफलता की कुंजी

भारतीय हॉकी टीम की यह ऐतिहासिक जीत प्रत्येक भारतीय के लिए प्रेरणा है। जापान के विरुद्ध शुरुआती पिछड़ने के बावजूद भारतीय खिलाड़ियों ने हार नहीं मानी और अपने शानदार प्रदर्शन से असंभव प्रतीत होने वाली स्थिति को विजय में बदल दिया।

इस उपलब्धि ने एक बार फिर सिद्ध किया है कि कठिन परिस्थितियां किसी भी लक्ष्य की प्राप्ति में बाधा नहीं बन सकतीं, यदि संकल्प मजबूत हो और सामूहिक प्रयास ईमानदार हों। खिलाड़ियों ने अपने प्रदर्शन से युवाओं को संदेश दिया है कि सफलता का कोई शॉर्टकट नहीं होता; इसके लिए निरंतर अभ्यास, समर्पण, अनुशासन और आत्मविश्वास आवश्यक है।

निष्कर्षत:, भारतीय पुरुष हॉकी टीम की छठी एशियाई चैंपियंस ट्रॉफी विजय देश के खेल इतिहास का एक गौरवपूर्ण अध्याय है। यह जीत केवल खिलाड़ियों की उपलब्धि नहीं, बल्कि उन प्रशिक्षकों, खेल संस्थाओं, परिवारों और खेलप्रेमियों के समर्पण का भी सम्मान है, जो भारतीय हॉकी को निरंतर आगे बढ़ाने में योगदान दे रहे हैं।

आइए, इस विजय को नई खेल संस्कृति के निर्माण का संकल्प बनाएं, ताकि भारतीय तिरंगा भविष्य में भी अंतरराष्ट्रीय हॉकी के मैदानों पर इसी गौरव और आत्मविश्वास के साथ लहराता रहे।

-सत्य भूषण शर्मा ,उदयपुर
313001 (राजस्थान)
संपर्क = बी-107, दिव्य ज्योति अपार्टमेंट, न्यू भूपालपुरा, उदयपुर -313001 (राजस्थान)
मोबाइल=9414934304

बेटी के लिए पहले कलम ले के चलेंगे

जब पढ़ाई-लिखाई की बात आती है तो आज भी अमूमन एक आम भारतीय परिवार का पूरा फोकस लड़कों पर ही होता है। ऐसे परिवार बहुत कम ही मिलेंगे जो लड़कियों की भी पढ़ाई का ध्यान लड़कों की तरह रखते हैं। जबकि वास्तविकता यही है कि एक लड़के के पढ़ने से सिर्फ उसी को फायदा होता है, मगर जब एक लड़की पढ़ती है तो पूरा परिवार लाभान्वित ही नहीं, आने वाली कई पीढ़ियां भी लाभान्वित होती हैं। इसलिए नारी शिक्षा को बढ़ावा दिया जाना केवल महिलाओं के हित में नहीं, बल्कि पूरे राष्ट्र के हित में है। जब महिलाएँ शिक्षित होंगी, तो समाज में ज्ञान, समानता और विकास का प्रकाश फैलेगा। यह वरीयता एक निवेश है, जिसका लाभ आने वाली पीढ़ियों तक पहुँचेगा।

आज जब बढ़ती हुई प्रतिस्पर्धा के दौर में सफलता प्राप्त करना आसमान से तारे तोड़ने के जैसा हो गया है, ऐसे माहौल में कोई अपना कहलाने वाला यदि कामयाबी हासिल करता है तो दिल का झूम उठना लाजिमी है। ज्यौर वे भी अगर बेटियां हों तो खुशियां और भी बढ़ जाती हैं। आज मिलते हैं ऐसी ही तीन बेटियों से ज

पिछले साल होली के तुरंत बाद माँ के साथ बाबा विश्वनाथ के दर्शनों का कार्यक्रम बना लिया। एक मित्र की बिटिया मंजरी वहां बीएचयू में पढ़ती थी, सो फोन करके उसे सूचित किया। तय कार्यक्रम के अनुसार जब हम बीएचयू परिसर में बाबा विश्वनाथ के नये मंदिर के पास



निर्दिष्ट स्थान पर पहुँचे तो बिटिया हमारा इंतजार कर रही थी। दिन भर बीएचयू भ्रमण के साथ ही काशी के बाजारों का लुत्फ लेने के बाद शाम में नाव में बैठकर हमने गंगा आरती देखी। इस बीच मंजरी की पढ़ाई-लिखाई और भावी योजनाओं पर भी चर्चा हुई। काशी से लौटने के एकाध महीने बाद एक दिन यूँ ही फेसबुक स्क्रॉल करते हुए उसके मामा की फेसबुक वॉल पर गया तो यूजीसी नेट में मंजरी द्वारा करीब 97 परसेंटाइल स्कोर किये जाने की सूचना थी। जल्द ही असिस्टेंट प्रोफेसर के पद को ?सुशोभित करने वाली मंजरी ने साबित कर दिया कि मेहनत इतनी खामोशी से करो कि सफलता शोर मचा दे।

तीन भाई-बहनों में सबसे बड़ी संज्ञा की प्रारंभ से ही विज्ञान के विषयों में रुचि थी। नतीजतन बायोलॉजी से बारहवीं की परीक्षा पास करने के बाद उसने नीट की तैयारी शुरू कर दी, लेकिन मध्यम वर्गीय परिवार की अपेक्षाकृत छोटी आय के कारण उचित संसाधनों के अभाव तथा छोटे शहर में सीमित शैक्षिक सुविधाओं के कारण उसे कहाँ मौका मिलना था! ऐसे में संज्ञा ने दो अटेम्प्ट के बाद बी.एससी. में दाखिला लेना ही मुनासिब समझा और फिजिक्स ऑनर्स करने के बाद एक प्राइवेट स्कूल जॉइन कर लिया। वहां कुछ महीनों तक पढ़ाने के बाद स्कूल से ब्रेक लेकर उसने अच्छे अंकों के साथ बीएड भी कर लिया। इसके बाद सीटेट और एसटेट में बेहतरीन स्कोर गेन करने के साथ ही शिक्षक भर्ती परीक्षा की तैयारी में जुट गयी। बिहार लोक सेवा आयोग की परीक्षा के ऐन पहले बुरी तरह से बीमार होने के बावजूद उसने हिम्मत नहीं हारी और एग्जाम क्रैक करने के बाद आज अपने अध्यापन कौशल की बदौलत सरकारी स्कूल की शिक्षिका के रूप में बच्चों के बीच खासी लोकप्रिय है।

स्कूली शिक्षा के दौरान शुरू से ही परीक्षाओं में अच्छा स्कोर हासिल करते हुए मनीषा ने आईसीएसई बोर्ड से बारहवीं कक्षा की परीक्षा काफी अच्छे अंकों से उत्तीर्ण की। संयुक्त परिवार में बड़े भाई-बहनों ने इंजीनियरिंग और मेडिकल में सफलता के झंडे गाड़ रखे थे। ऐसे में साइंस स्ट्रीम से किनारा कर पाना आसान नहीं था। इसके बावजूद मनीषा ने अपने मन की सुनते हुए अभिभावकों को मनाया और इंलिश ऑनर्स के बाद पोस्ट ग्रेजुएशन किया। इसके बाद कंटेंट राइटिंग में हाथ आजमाया, जहाँ उसकी अभिव्यक्ति कौशल को काफी सराहना मिली। मगर मनीषा के मन में तो कोई और ही ख्वाब पल रहा था। उसने बैंकिंग की तैयारी शुरू कर दी और दूसरे ही प्रयास में क्लर्क कम कैशियर की परीक्षा पास कर ली। पहली बार घर-परिवार से दूर अकेले रहते हुए नौकरी के साथ आगे की तैयारी भी करती रही। उसके कठिन परिश्रम का ही परिणाम है कि महज छह महीने क्लर्क कम कैशियर की नौकरी करने के बाद ही बैंक पीओ परीक्षा में शानदार सफलता अर्जित करने के साथ ही आज वह पीओ के पद को सुशोभित कर रही है।

इन बेटियों की शानदार उपलब्धियों के बारे में जानने के बाद यह तथ्य भी परिलक्षित होता है कि माता-पिता यदि पुत्री की पढ़ाई को वरीयता देते हैं तो पुत्रियां भी स्वयं को अध्ययन और स्वाध्याय के प्रति स्वयं को समर्पित कर देती हैं। ज्यौर फिर उनके परिश्रम का परिणाम जब सामने आता है तो इन पुत्रियों का भविष्य तो उज्ज्वल बनता ही है, माता-पिता के भी मन में उनके आने वाले दिनों को लेकर न केवल निश्चिंतता के भाव आते हैं, बल्कि उनका सिर भी गर्व से ऊंचा उठ जाता है। यही नहीं, समाज को भी अनुकरणीय प्रेरणा प्राप्त होती है। इसके लिए आवश्यक है कि बेटा-बेटी में किसी तरह का भेदभाव नहीं रखते हुए बेटियों को भी पढ़ाई-लिखाई की तमाम सुविधाएं और अवसर उपलब्ध कराए जाएं। बेटी के जन्म के साथ ही माता-पिता उसके हाथ पीले करने की योजनाएं बनाने और उससे संबंधित और दूसरी तैयारियां करने के बजाय उसकी पढ़ाई-लिखाई पर पूरा ध्यान दें।

मशहूर शायर सलीम सिद्दीकी ने क्या खूब लिखा है -

चूड़ियां भी हैं बाजार में चुनरी भी है लेकिन
बेटी के लिए पहले कलम ले के चलेंगे।

-मोहन मंगलम

रोटरी राज्यस्तरीय राजस्थानी भाषा-साहित्य पुरस्कार समारोह






बीकानेर। रोटरी क्लब बीकानेर द्वारा राजस्थानी भाषा और साहित्य से संबंधित साहित्यकारों को प्रतिवर्ष राज्यस्तरीय पुरस्कार प्रदान किये जाते हैं। रोटरी क्लब अध्यक्ष प्रवीण गुप्ता ने बताया कि प्रथम राजस्थानी पुरस्कार 51000/- (इक्यावन हजार) का ''कला डूंगर कल्याणी राजस्थानी शिखर पुरस्कार'' राजस्थानी और हिन्दी के प्रतिष्ठित साहित्यकार डॉ. कल्याणसिंह शेखावत, जोधपुर को घोषित किया गया है। श्री शेखावत राजस्थानी भाषा, साहित्य, संस्कृति और हिन्दी के प्रतिष्ठित विद्वान हैं।




रोटरी क्लब प्रान्त 3053 के रोटरियन एवं राजस्थानी सामरोह के संयोजक श्री मनमोहन कल्याणी ने बताया कि राजस्थानी भाषा का रुपये 25000/- (पच्चीस हजार) ''खींवराज मुन्नीलाल सोनी राजस्थानी गद्य पुरस्कार'' बालोतरा के लेखक अर्जुनदान चारण की कहानी संग्रह ''जीवण जात्रा-जात्रा जीवण'' को दिया जायेगा।

रुपये 15000/- (पन्द्रह हजार) ''ब्रज उर्मि अग्रवाल राजस्थानी पद्य पुरस्कार'' डॉ. गौरीशंकर प्रजापत, बीकानेर की कविता की पुस्तक ''भळै भरोसो भोर रो'' पुस्तक को घोषित हुआ है।

कल्याणी ने बताया कि रुपये 11000/- (इग्यारह हजार) ''सोमवर्षा राजस्थानी महिला साहित्य पुरस्कार'' प्रेमलता सोनी, जयपुर को घोषित हुआ है। ''सुन्दरदेवी-तुलसीदास हर्ष राजस्थानी बाल साहित्य पुरस्कार'' उदयपुर की महिला लेखिका हेमलता दाधीच को रुपये 7000/- (सात हजार) की राशि पुरस्कार स्वरूप दी जायेगी।

इसके साथ ही ''अरुण प्रकाश गुप्ता राजस्थानी भाषा प्रेरक पुरस्कार पृथ्वीराज रतनु को दिया जायेगा।

रोटरी क्लब सचिव कुणाल कोचर ने बताया कि प्रान्तपाल श्री बृजमोहन अग्रवाल समारोह के मुख्य अतिथि होंगे तथा स्वामी विमर्शानन्दगिरिजी महाराज विशिष्ट अतिथि के रूप में आशीर्वाद देंगे।

रोटरी क्लब, बीकानेर के राज्य स्तरीय पुरस्कारों का वितरण समारोह आगामी माह 14 नवम्बर, 2026 को रोटरी क्लब सभागार, सादुलगंज, बीकानेर में होगा।

30 परिवारों को बांटी मिठाइयां, सुरक्षित व नशामुक्त त्यौहार का लिया संकल्प

बाड़मेर राजस्थान। दीपावली के पावन अवसर पर शनिवार को अभियान ग्रामोदय के तहत रिंग रोड एरिया सांसियों का तला में भामाशाह जोगेश मेहता एवं सामाजिक कार्यकर्ता मुकेश बोहरा अमन की उपस्थिति में 30 परिवारों व बच्चों को मिठाइयां वितरित की गई तथा नशा मुक्त जीवन को लेकर संकल्प व चर्चा की गई।

दीपावली पर्व के उपलक्ष में रिंग रोड एरिया सांसियों का तला में भामाशाह जोगेश मेहता के सौजन्य से 30 परिवारों व बच्चों को मिठाइयां वितरित की गई एवं नशा मुक्त जीवन व सुरक्षित त्यौहार का लेकर संकल्प दिलाया गया व चर्चा की गई। सामाजिक कार्यकर्ता मुकेश बोहरा अमन ने कहा कि नशामुक्ति से व्यक्ति के जीवन में नये उजाले का संचार होता है और उसके परिवार में खुशियां आती है। अमन ने कहा कि हमें स्वयं और अपने परिवार में अच्छे संस्कारों के माध्यम से भावी पीढ़ी को सुयोग्य बनाना है। इस दौरान जोगेश मेहता, मुकेश अमन, विजय सिंघवी, वंश जैन, कानाराम, गजेन्द्र, कुंदन सहित महिला पुरुष बच्चे उपस्थित रहे।



समय है अमूल्य धन

समय है एक ऐसा अमूल्य धन जिसकी कीमत हर कोई आसानी से आँक भी नहीं सकता है । समय की क़ीमत को हर किसी के लिये आँकना आसान भी नहीं है । हर समय की क़ीमत वहीं जाने जो हिरा विवेकवान । मूर्ख क्या जाने कि हीरा होता है कितना मूल्यवान । पारसमणि पास होते हुए भी नही बन पाता धनवान ।

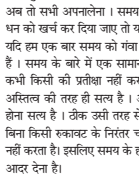

यह जानकर समय बन गया दयावान ।वह बता रहा अपनी क़ीमत अपनी जुबान । मैं हूँ बड़ा बलवान और भाग्यवान । जिसने मुझे आँका वह बन गया महान । मेरा जिसने किया मान-सम्मान उसने पाया हर समस्या का समाधान । मुझमे इतनी शक्ति है जो छू ले सफलता का आसमान । मनुष्य जीवन है दुर्लभ यह जानता हर प्रज्ञावान । मुझसे प्रीत लगा वह हो गया धर्म की और गतिमान ।

मैं भी अंत तक उसके साथ रहता चलायमान । जब तक वह नहीं पाता मुक्ति का वरदान । मैं हूँ अमूल्य इसको सही से जान लेना । दुष्कर्मों में कभी नहीं मुझे लगाना । महावीर की वाणी ''समयम गोयम मां पमाएए ÷ इसको अब तो सभी अपनालेना । समय धन से भी ज्यादा कीमती है क्योंकि यदि धन को खर्च कर दिया जाए तो यह वापस प्राप्त किया जा सकता है हालांकि यदि हम एक बार समय को गंवा देते हैं तो इसे वापस प्राप्त नहीं कर सकते हैं । समय के बारे में एक सामान्य कहावत है कि समय और ज्वार-भाटा कभी किसी की प्रतीक्षा नहीं करते हैं। यह बिल्कुल पृथ्वी पर जीवन के अस्तित्व की तरह ही सत्य है । अर्थात जिस तरह से पृथ्वी पर जीवन का होना सत्य है । ठीक उसी तरह से यह कहावत भी बिल्कुल सत्य है समय बिना किसी रुकावट के निरंतर चलता रहता है यह कभी किसी की प्रतिक्षा नहीं करता है। इसलिए समय के हर पल का कर पूरा सदुपयोग उसे समुचित आदर देना है।

› प्रदीप छाजेड़ (बोरावड़)

